Sub - Psychology
B.A. Part II (Hons)
Paper - III
Chapter - Aspects of Mind
Topic - Dynamic Aspect of Mind [Ego]
By Nishikant Jaiswal (Assistant Professor)
Dr. L.K.V.D College Tajpur, Samastipur
Lecture Series No. - II

Ego

ईगो मन के गत्यात्मक पहलू का दूसरा भाग है। ईगो का विकास निराशा के कारण होता है। यह व्यक्तित्व का वह भाग है जिसका सम्बंध वास्तविक जगत से रहता है। फ्रॉयड ने इसे सचेतन बुद्धि (Selfconscious intelligence) कहा है, क्योंकि यह कार्य को सोच-समझकर करता है। चूँकि ईगो को वास्तविकता का पूर्ण ज्ञान रहता है इसलिए वह ईड और सुपर ईगो के बीच संतुलन स्थापित करता है। यानी अपनी क्रिया द्वारा एक ही साथ ईड और सुपर ईगो दोनो को संतुष्ट करता है। इसलिए यह भी कहा जाता है कि ईगो दो स्वामियो का दास है जिन्हे भी एक साथ दोनो को खुश खुश करता है यद्यपि दोनो की इच्छाएँ विपरीत रहती है। एक उदाहरण द्वारा इसे और भी स्पष्ट किया जा सकता है। मान लें कि ईड

Teachers Signature.....

Scanned with CamScanner

कहता है कि किसी व्यक्ति का घड़ी चुरा लो ठीक इसके विपरीत सुपर-ईगो कहता है ऐसा करना पाप है। यह अनैतिक तथा असामाजिक कार्य है। अतः ऐसा नहीं करना चाहिये यहाँ पर दोनो की विपरीत इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए ईगो कहता है कि इस समय ऐसा करना ठीक नहीं है, क्योंकि पकड़ाने तथा पिटाई का डर है। इस प्रकार ईगो पकड़ाने तथा पिटाई के भय के माध्यम से ईड और सुपर ईगो दोनों के बीच संतुलन स्थापित करता है। यानि वह इस माध्यम से ईड़ एवं सुपर ईगो दोनो को खुश करता है। इस प्रकार ईगो जिसे वास्तविकता का ज्ञान रहता है अपनी होशियारी से अपने दोनो स्वामियों को खुश करता है। अतः हम कह सकते है कि ईगो को ऐसे दो स्वामियों की सेवा करनी पड़ती है जिनकी इच्छाएँ विपरीत है (The ego has to serve two masters with clashing interests) उपर्युक्त विवेचनाओं का समर्थन करते हुए रिचार्ड डब्लू॰ मारक्स (Richard W. Meee) ने लिखा है "ईगो व्यक्तित्व का वह भाग है जो एक तरफ बाह्य जगत के सम्पर्क में रहता है और दूसरी ओर ईड़ के सम्पर्क में। यह विचार, निर्णय, व्याख्या और व्यवहार को वास्तविक जीवन के अनुसार व्यवहारिक एवं कुशल बनाने का प्रयास करता है।